शान्ति इस सहस्राब्दी की माँग है,
प्रभु की जानकारी ही इसे प्राप्त करने का उपाय है
- निरंकारी माता सविंदर हरदेव जी

(संत निरंकारी मिशन की तत्कालीन सद्गुरु माता सविंदर हरदेव जी दिनांक ५ अगस्त, २०१८ को ब्रह्मलीन हुई । उनका पूरा जीवन मानवता के लिए समर्पित रहा । उनके स्मृति दिन के उपलक्ष्य में उन्हीं के प्रवचनों के कुछ अंश पाठकों के लाभार्थ यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं । आशा है कि पाठक गणों के लिए यह सामग्री निश्चित रुप से प्रेरणादायी सिद्ध हो।)

प्रस्तुती - स.वि.लव्हटे (मुंबई)

बाबा जी से हमने सुना है कि - 'शान्ति' इस सहस्राब्दी की माँग है, प्रभु की जानकारी ही इसे प्राप्त करने का उपाय है । (Peace is the need of millennium, God-knowledge is the way to attain it.) (अर्थात् यह जो निरंकार का ज्ञान हमें मिला है ये वो ताकत है जो एक दूसरे को आपस में जोड़ती है । मिल-जुलकर हम रह सकते हैं, दिल को अगर विशाल बनाएं ।

कहीं पर दो लाईनें पढ़ने को मिलीं -

कुरान भी मुझको अच्छी लगती है,
गीता का ज्ञान भी मेरा है ।
मुझ पर बरसती है मेहरबानियां बहुत,
अल्लाह भी मेरा है, भगवान भी मेरा है ।

ये विचारधारा वही है जो वर्षों-वर्ष से बाबा जी ने हमें सिखाई और चाहा कि इस पर अमल करके हम अपना जीवन बिताएं । बिना कोई जात-पात या उँच-नीच देखे, सबके साथ एक जैसा प्यार करें, सबका एक जैसा सत्कार करें ।

निश्चित रुप से हमें भाईयों की तरह इकट्ठे फलना-फूलना सीखना चाहिए अन्यथा मूर्खों की तरह मिट जाना होगा । (We must learn to flourish together as brothers or perish together as fools.) सामाजिक प्राणी के रुप में हम सभी इस समाज में रहते हैं । हम एक दूसरे पर परस्पर निर्भर हैं । हमने रहना सबके साथ है, अब यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम मिलकर प्यार से रहें या लड़-झगड़कर । अगर कोई ऐसा सोचता है कि हम किसी दूसरे का बुरा करेंगे तो उसका असर हमारे ऊपर नहीं होगा, तो यह गलत फहमी है ।

पड़ोसी के घर में अगर हम आग लगाते हैं तो उसकी लपटें, धुआं, गर्मी हमारे घर में भी आयेगी । वहीं अगर हम पड़ोसी के घर में महकदार फूल खिलाएंगे तो उनकी महक हमारे आंगन में भी आयेगी ।

कहने को तो इन्सान के अंदर जो एक Unique quality (अद्वितीय गुणवत्ता) होनी चाहिये वो है । सहानुभूति मतलब कि एक-दूसरे के दुख-दर्द में काम आना, सहानुभूति देना, उनकी समस्याओं को समझना, न कि दुख-दर्द देने वाला बनना । पर आज का इन्सान सहानुभूति तो क्या जान-बूझकर वही काम करता है, वही बात करता है जिससे दूसरों को समस्याएं पैदा हों, उनको तकलीफ पहुंचे ।

एक वो पंक्ति भी कई बार सुनी - 'हम तो डूबे हैं सनम, तुम्हं भी ले डूबेंगे' । मतलब खुद तो कोई ठीक काम करना नहीं है और अगर कोई कर भी रहा होता है तो उसको करने नहीं देना । उसके लिए समस्याएं खड़ी कर देना । ये दुनिया में देखने को मिलता है । यह महापुरुषों वाली बात नहीं है । एक वह पंक्ति भी है कि - Don't creat problems in your head that don't even exist. (अपने मन में वो समस्याएं न पैदा करें जो सम्भवत: मौजूद ही नहीं हैं ।) हम ऐसी कोई बात अपने मन से न पैदा कर दें जिससे खुद भी अपना मन खराब करें, अपने लिये तनाव और परेशानी पैदा करें और लोगों द्वारा वो आगे बढ़ा-चढ़ा कर उनकी भी परेशानियों का कारण बन जाएं ।

Work for a cause not for applause. (उद्देश्य के लिए कार्य करें वाहवाही के लिए नहीं) वाली भावना हमें बाबा जी ने हमेशा सिखाई । निरंकार कृपा करे इस भावना के साथ हम आगे से आगे बढ़-चढ़कर सारी दुनिया को संवार पाएं । अपना जीवन तो संवारें ही, सारी दुनिया को संवार पाएं, एक सुधार लेकर आ पाएं ।

****